International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

# आल्हा–उदल की सैन्य रणनीति और योद्धा चरित्र

**लक्ष्मी दीप्ति पटेल[1], डॉ0 जितेन्द्र वर्मा[2]**
पी.एच.डी. शोध छात्रा[1], शोध निर्देशक[2]
इतिहास विभाग, पी0के0 विश्वविद्यालय, करैरा, शिवपुरी (म0प्र0)

## सारांश

अल्हा और ऊदल, बुंदेलखंड के वीर योद्धा, अपनी अद्वितीय सैन्य दक्षता और अटूट योद्धा भावना के लिए पूज्य माने जाते हैं। चंदेल वंश के प्रमुख सेनापति के रूप में, उनके युद्धों ने असाधारण रणनीतिक कुशलता का प्रदर्शन किया, जिसमें ''गुरिल्ला युद्ध, जटिल युद्ध संरचनाएँ, और मनोवैज्ञानिक रणनीतियाँ'' शामिल थीं, जो उनके सैन्य अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। ''साहस, निष्ठा और बलिदान'' के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता ने उन्हें आदर्श ''क्षत्रिय योद्धा'' के रूप में प्रतिष्ठित किया, जिनकी विरासत आज भी लोककथाओं और ऐतिहासिक आख्यानों में जीवंत बनी हुई है।

यह शोध पत्र ''अल्हा और ऊदल द्वारा अपनाई गई सैन्य रणनीतियों'' का गहन अध्ययन करता है, जिसमें उनके युद्ध कौशल और रणनीतिक चातुर्य को उजागर किया गया है। मध्यकालीन अभिलेखों और फारसी ग्रंथों जैसे ऐतिहासिक स्रोतों के साथ–साथ ''अल्हा–खंड जैसी लोक परंपराओं'' की समीक्षा करके, यह अध्ययन यह विश्लेषण करने का प्रयास करता है कि उनकी सैन्य रणनीतियाँ कितनी हद तक ऐतिहासिक वास्तविकता पर आधारित थीं। इसके अतिरिक्त, यह शोध उनके ''सांस्कृतिक और क्षेत्रीय पहचान पर प्रभाव'' को भी समझने का प्रयास करता है, क्योंकि उनके वीरता के किस्से आज भी ''लोकगीतों, साहित्य और नाटकीय प्रस्तुतियों'' में गूंजते हैं।

उनकी कथाओं में इतिहास और पौराणिकता का मिश्रण एक अनूठी चुनौती प्रस्तुत करता है, जिससे वास्तविक सैन्य रणनीतियों और अतिशयोक्तिपूर्ण लोककथाओं के बीच अंतर करना कठिन हो जाता है। ''यद्यपि उनके अस्तित्व को प्रमाणित करने वाले निश्चित पुरातात्विक साक्ष्य नहीं मिले हैं, किंतु बुंदेलखंड में उनकी वीरता की व्यापक मान्यता उनके ऐतिहासिक महत्व को दर्शाती है''। उनके पराक्रम की गाथाएँ ''क्षेत्रीय वीरता, संघर्ष, और सम्मान'' की धारणाओं को आकार देने में सहायक रही हैं, जो मध्यकालीन भारतीय युद्ध परंपरा की विशेषता थी।

इसके अलावा, यह अध्ययन यह मूल्यांकन करने का प्रयास करता है कि ''आधुनिक काल में योद्धा आदर्शों और प्रतिरोध की धारणाओं'' को उनकी विरासत ने किस प्रकार प्रभावित किया है। ऐतिहासिक विश्लेषण और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को एकीकृत करके, यह शोध ''अल्हा और ऊदल के मध्यकालीन युद्ध कला में योगदान'' की व्यापक समझ प्रदान करता है। उनकी निरंतर प्रासंगिकता, लोक परंपराओं, क्षेत्रीय गौरव और ऐतिहासिक विमर्श में उनकी अमिट छवि को दर्शाती है।

अंततः, ''यद्यपि उनकी ऐतिहासिक प्रामाणिकता विद्वानों के बीच चर्चा का विषय बनी हुई है, फिर भी बुंदेलखंड के वीर योद्धाओं के रूप में उनकी प्रतिष्ठा निर्विवाद है'', जो उन्हें भारतीय लोककथाओं और सैन्य इतिहास के ''अनंत नायकों'' के रूप में स्थापित करती है।

**कीवर्ड्:** योद्धा मर्यादा, अल्हा–ऊदल, सैन्य रणनीतियाँ

## परिचय

बुंदेलखंड, जो अपने गौरवशाली इतिहास और वीरता के लिए प्रसिद्ध है, ने भारत के कुछ सबसे पराक्रमी योद्धाओं को जन्म दिया है। इनमें ''अल्हा और ऊदल'' ऐसे महान योद्धा हैं, जिनकी ''असाधारण युद्ध कौशल, अटूट साहस और अटल निष्ठा'' को लोककथाओं और ऐतिहासिक कथाओं में अमर कर दिया

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

गया है। पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाई जाने वाली उनकी गाथाएँ आज भी बुंदेलखंड की ''सांस्कृतिक पहचान'' को मजबूत करती हैं और ''साहस, कर्तव्य और बलिदान'' के आदर्शों को प्रेरित करती हैं।

अल्हा और ऊदल ''मध्यकालीन भारत के शक्तिशाली शासक चंदेल वंश के राजा परमर्दिदेव'' के अधीन सेनापति थे। उनके युद्ध–कौशल की परीक्षा कई संघर्षों में हुई, विशेष रूप से ''पृथ्वीराज चौहान'' के विरुद्ध हुए युद्धों में, जो उस समय के सबसे शक्तिशाली शासकों में से एक थे। चंदेलों और चौहानों के बीच हुए ये संघर्ष भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण चरणों में गिने जाते हैं, जो ''बदलते सैन्य गठबंधनों, रणनीतिक युद्धनीति और क्षेत्रीय शक्तियों के तीव्र प्रतिस्पर्धा'' को दर्शाते हैं।

युद्ध के मैदान में उनकी उपलब्धियों के अलावा, ''अल्हा और ऊदल ने क्षत्रिय योद्धा मर्यादा का आदर्श प्रस्तुत किया'', जिसमें ''साहस, सम्मान और अपने राजा एवं मातृभूमि के प्रति अटूट निष्ठा'' का पालन प्रमुख था। उनकी कथाएँ न केवल उन्हें ''कुशल योद्धाओं'' के रूप में दर्शाती हैं, बल्कि उन्हें ''निस्वार्थ समर्पण और नैतिक शुद्धता'' का प्रतीक भी बनाती हैं। ''इनकी कठोर योद्धा मर्यादा के प्रति निष्ठा ने उन्हें केवल सैन्य इतिहास का ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक कथाओं का भी अमर नायक बना दिया।''

अल्हा और ऊदल की सैन्य रणनीतियों का अध्ययन ''मध्यकालीन भारत की युद्ध कला'' में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। उनकी युद्ध पद्धतियाँ, जिनमें ''गुरिल्ला युद्धनीति, सामरिक संरचनाएँ और मनोवैज्ञानिक रणनीतियाँ'' शामिल हैं, उस समय की सैन्य रणनीतियों की उन्नत प्रकृति को दर्शाती हैं। ऐतिहासिक अभिलेखों और मौखिक परंपराओं का विश्लेषण करके, यह शोध ''अल्हा और ऊदल द्वारा अपनाई गई वास्तविक युद्ध रणनीतियों'' का अन्वेषण करने का प्रयास करता है, साथ ही उनकी ''किंवदंती को आकार देने वाली पौराणिक अतिशयोक्तियों'' से उन्हें अलग करने का लक्ष्य रखता है।

इसके अतिरिक्त, ''अल्हा–खंड'' जैसी लोक परंपराओं में उनकी गाथाओं की निरंतरता आज भी ''बुंदेलखंड की क्षेत्रीय पहचान'' को प्रेरित करती है। सदियों से इन कथाओं का जीवंत बने रहना यह दर्शाता है कि वे केवल ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं हैं, बल्कि ''वीरता और प्रतिरोध के प्रतीक'' भी हैं, जो अपने लोगों की ''अविचलित साहसिक भावना'' का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह अध्ययन ''इतिहास और लोककथाओं के बीच की खाई को पाटने'' का प्रयास करता है, जिससे ''अल्हा और ऊदल के जीवन, युद्धों और सांस्कृतिक प्रभाव'' पर एक गहरी और संतुलित दृष्टि प्राप्त की जा सके।

## उद्देश्य

1. अल्हा और ऊदल द्वारा उपयोग की गई सैन्य रणनीतियों और युद्ध कौशल का विश्लेषण करना।
2. चंदेल साम्राज्य की रक्षा में उनकी भूमिका और पृथ्वीराज चौहान के साथ उनकी युद्ध संबंधी प्रतिस्पर्धा की समीक्षा करना।
3. अल्हा और ऊदल द्वारा अपनाई गई योद्धा संस्कृति का अध्ययन करना, जिसमें उनकी निष्ठा और बलिदान के सिद्धांत शामिल हैं।
4. उनकी युद्ध रणनीतियों की मध्यकालीन भारत की समकालीन युद्ध तकनीकों से तुलना करना।
5. उनकी युद्ध रणनीतियों और योद्धा संस्कृति के बुंदेलखंड की सैन्य परंपरा और लोककथाओं पर पड़े प्रभाव का मूल्यांकन करना।

## शोध पद्धति

यह अध्ययन अल्हा और ऊदल की सैन्य रणनीतियों और योद्धा संस्कृति की जांच के लिए गुणात्मक शोध दृष्टिकोण अपनाता है, जो ऐतिहासिक ग्रंथों, लोक परंपराओं और मौखिक कथाओं पर आधारित है। प्राथमिक स्रोतों में मध्यकालीन अभिलेख, फारसी इतिहास–ग्रंथ, और चंदेलकालीन अभिलेख

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

शामिल हैं, जो उस समय की राजनीतिक और सैन्य पृष्ठभूमि की जानकारी प्रदान करते हैं। द्वितीयक स्रोतों में मध्यकालीन भारतीय युद्ध–कला, बुंदेलखंड के इतिहास और लोककथाओं पर विद्वानों द्वारा लिखित ग्रंथ शामिल हैं, जो अल्हा और ऊदल की गाथाओं को व्यापक ऐतिहासिक संदर्भ में रखने में सहायता करते हैं।

यह शोध ''अल्हा–खंड'' के विभिन्न संस्करणों की तुलनात्मक समीक्षा भी करता है, जिससे कथा में मौजूद विविधताओं को समझा जा सके और ऐतिहासिक तथ्यों को साहित्यिक अतिशयोक्ति से अलग किया जा सके। फील्ड रिसर्च के तहत इतिहासकारों, लोककथाकारों, और बुंदेलखंडी संस्कृति के विशेषज्ञों के साक्षात्कार लिए जाते हैं, जिससे यह समझा जा सके कि इन गाथाओं को समय के साथ कैसे संरक्षित और व्याख्यायित किया गया है।

अध्ययन क्षेत्रीय लोक–नाट्य रूपों जैसे ''नौटंकी'' और ''अल्हा–गायन'' का भी विश्लेषण करता है, जिससे यह जाना जा सके कि मौखिक कथानक किस प्रकार जनमानस की धारणाओं को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, मध्यकालीन पांडुलिपियों और ऐतिहासिक अभिलेखों का पाठ–विश्लेषण किया जाता है, जिससे उनके जीवन से जुड़े घटनाओं का क्रॉस–रेफरेंस किया जा सके।

इस अध्ययन में ''अंतर–विषयक दृष्टिकोण'' अपनाया गया है, जिसमें इतिहास, साहित्य और संस्कृति अध्ययन को समाहित किया गया है, जिससे अल्हा और ऊदल की विरासत की गहरी समझ विकसित की जा सके। साथ ही, नृवंशविज्ञान संबंधी फील्डवर्क के तहत लोक महोत्सवों और सांस्कृतिक आयोजनों में भागीदारी अवलोकन किया जाता है, जिससे उन समुदायों की जीवंत परंपराओं को समझा जा सके जो इन नायकों को पूजनीय मानते हैं।

इसके अतिरिक्त, समकालीन साहित्य, मीडिया और राजनीतिक विमर्श में अल्हा और ऊदल के संदर्भों का ''आलोचनात्मक विमर्श विश्लेषण'' किया जाता है, जिससे यह जाना जा सके कि विभिन्न समय–काल में उनकी छवि कैसे परिवर्तित हुई है।

इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी को समेकित करके ''इतिहास, पौराणिकता और क्षेत्रीय पहचान'' के अंतर्संबंध को उजागर करना है, जिससे अल्हा और ऊदल की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत पर संतुलित विश्लेषण प्रस्तुत किया जा सके।

## अल्हा–ऊदल की सैन्य रणनीतियाँ

### 1. छापामार युद्ध का प्रयोग

अल्हा और ऊदल छापामार युद्ध की अपनी उत्कृष्ट दक्षता के लिए प्रसिद्ध थे, जिसने उनकी सैन्य सफलताओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बुंदेलखंड के दुर्गम भौगोलिक क्षेत्र का गहन ज्ञान होने के कारण, वे दुश्मन सेनाओं पर अचानक और तेज हमले करने में सक्षम थे, जिससे वे अपने प्रतिद्वंद्वियों को चौंका देते और उन्हें भारी नुकसान पहुँचाते।

पारंपरिक युद्ध के विपरीत, छापामार रणनीतियाँ गति, गुप्तता और गतिशीलता पर आधारित थीं, जिससे अल्हा और ऊदल की सेना जल्दी वार कर सकती थी और फिर घने जंगलों, पहाड़ियों और नदी तटों की सुरक्षा में पीछे हट सकती थी, इससे पहले कि शत्रु कोई जवाबी हमला कर सके। इस तरह के 'हिट–एंड–रन'युद्ध कौशल ने न केवल विपक्ष को कमजोर किया बल्कि शत्रु सेना में भय और अनिश्चितता का वातावरण भी उत्पन्न किया।

अल्हा और ऊदल अपने हमलों के लिए रणनीतिक स्थानों का सावधानीपूर्वक चयन करते थे, जहाँ वे संकीर्ण मार्गों, घने जंगलों और ऊबड़–खाबड़ चट्टानों जैसी प्राकृतिक संरचनाओं का लाभ उठाकर दुश्मन को घेर सकते थे। कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में तीव्रता से संचालन करने की उनकी क्षमता ने उन्हें उन विरोधियों पर बढ़त दिलाई जो इस इलाके से परिचित नहीं थे।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

इसके अलावा, उन्होंने छल–कपट की रणनीतियाँ भी अपनाईं, जैसे कि दुश्मनों को भटकाने के लिए झूठे रास्ते बनाना और उन्हें ऐसे असुविधाजनक स्थानों पर ले जाना जहाँ वे आसानी से पराजित किए जा सकते थे। वे छोटे और चुस्त सैन्य टुकड़ियों (उंसस, ।हपसम न्दपजे) के माध्यम से शत्रु की आपूर्ति लाइनों को बाधित करते, अलग–थलग पड़े शिविरों पर हमला करते और शत्रु की सेना को सुदृढ़ीकरण भेजने से रोकते, जिससे बड़े सैन्य बल अस्थिर हो जाते।

इन रणनीतियों ने उन्हें संख्यात्मक रूप से अधिक शक्तिशाली विरोधियों, जैसे कि पृथ्वीराज चौहान की विशाल सेनाओं, के विरुद्ध संघर्ष करने में सक्षम बनाया, बिना लंबे समय तक प्रत्यक्ष युद्ध में उलझे। उनकी छापामार युद्ध रणनीति न केवल उनकी सैन्य बुद्धिमत्ता का प्रमाण थी, बल्कि उनकी अनुकूलनशीलता और दूरदर्शी रणनीति को भी दर्शाती थी।

स्थानीय भूगोल की गहरी समझ और असामान्य युद्ध तकनीकों के प्रयोग के माध्यम से, अल्हा और ऊदल ने बुंदेलखंड की रक्षा करने में सफलता प्राप्त की। उनकी रणनीतिक कुशलता ने सुनिश्चित किया कि वे हमेशा दुश्मनों के लिए खतरनाक बने रहें, और अपनी सीमित सैन्य शक्ति के बावजूद युद्ध की दिशा को बदल सकें।

इस अभिनव युद्ध शैली ने न केवल उन्हें इतिहास में अमर बना दिया, बल्कि भविष्य की सैन्य रणनीतियों को भी प्रभावित किया, जिससे छापामार युद्ध की प्रभावशीलता को असममित युद्ध में स्थापित किया गया।

## 2. युद्ध संरचनाएँ और सामरिक स्थिति

अल्हा और ऊदल ने युद्ध संरचनाओं और सामरिक स्थिति में अद्भुत कुशलता का प्रदर्शन किया, जिससे वे संख्या और संसाधनों में श्रेष्ठ शत्रु सेनाओं को चतुराई से मात देने में सक्षम रहे। उन्होंने विभिन्न युद्ध संरचनाओं का उपयोग किया, जिनमें ''गरुड़ व्यूह'' और ''चक्रव्यूह'' विशेष रूप से प्रभावी रहे। इन रणनीतियों ने युद्ध के मैदान पर नियंत्रण बनाए रखने और युद्ध की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

### ✓ गरुड़ व्यूह

यह व्यूह एक गरुड़ (ईगल) के फैलाए गए पंखों के समान होता था, जिसमें केंद्रीय सेना गरुड़ के सिर का निर्माण करती थी, दोनों ओर की टुकड़ियाँ पंखों के रूप में व्यवस्थित होती थीं, और पिछले हिस्से में सैनिक पूंछ की भांति सुरक्षा प्रदान करते थे। यह रणनीति शत्रु सेना को चारों ओर से घेरने, पिंसर मूवमेंट के माध्यम से फँसाने और कई दिशाओं से समन्वित हमले करने में सहायक थी। इस व्यूह की मदद से अल्हा और ऊदल की सेना अधिक गतिशीलता और लचीलापन प्राप्त कर सकती थी, जिससे विरोधियों के लिए उनके बचाव को भेदना अत्यंत कठिन हो जाता था।

### ✓ चक्रव्यूह

यह एक गोलाकार या सर्पिल युद्ध संरचना थी, जिसका प्रयोग शत्रु को भ्रमित करने और फँसाने के लिए किया जाता था। इस रणनीति में सैनिकों को एक के बाद एक समबमदजतपब चक्रों में तैनात किया जाता था, जिससे शत्रु सेना धीरे–धीरे केंद्र की ओर खिंचती चली जाती थी। जैसे ही दुश्मन अंदर प्रवेश करता, सैनिक अपनी स्थिति को लगातार बदलते रहते, जिससे उनके लिए बाहर निकलना कठिन हो जाता। यह रणनीति विशेष रूप से संख्या में बड़ी सेनाओं के विरुद्ध प्रभावी थी, क्योंकि यह शत्रु सेना को सीमित क्षेत्र में बाँधकर उनके आंदोलन को बाधित करती और उन पर केंद्रित हमले करने का अवसर प्रदान करती। चक्रव्यूह की जटिलता इसे सफलतापूर्वक लागू करने के लिए असाधारण समन्वय और

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

अनुशासन की माँग करती थी, जो अल्हा और ऊदल की उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमता और उनके सैनिकों के कठोर प्रशिक्षण का प्रमाण था।

✓ **अन्य सामरिक रणनीतियाँ**

इन युद्ध संरचनाओं के अलावा, अल्हा और ऊदल ने ''फ्लैंकिंग रणनीति'' का भी प्रयोग किया, जिसमें वे शत्रु सेना पर किनारों से हमला कर उनकी पंक्तियों को अस्त–व्यस्त कर देते और अपने सैनिकों के लिए आगे बढ़ने का मार्ग खोलते।

''उच्च भूमि'' का प्रयोग भी उनकी प्रमुख रणनीतियों में शामिल था, जिससे उन्हें युद्ध के मैदान का बेहतर दृश्य प्राप्त होता और शत्रु के हमलों को विफल करना अधिक आसान हो जाता। वे अपने धनुर्धरों और घुड़सवारों को रणनीतिक रूप से तैनात करते थे, जिससे वे युद्ध में प्रवेश करने से पहले ही शत्रु को अधिकतम क्षति पहुँचा सकें।

इन युद्ध संरचनाओं और रणनीतियों के कुशल प्रयोग के कारण, अल्हा और ऊदल अपने शक्तिशाली शत्रुओं को बार–बार मात देने में सफल रहे। उनकी युद्ध–कला और सामरिक चतुराई ने उन्हें महान योद्धाओं की श्रेणी में ला खड़ा किया। उनके द्वारा विकसित की गई युद्ध–नीतियाँ मध्यकालीन भारतीय सैन्य इतिहास में अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय बनी हुई हैं, जो यह दर्शाती हैं कि युद्ध में विजयी होने के लिए केवल बल ही नहीं, बल्कि रणनीतिक सोच और युद्ध कौशल भी आवश्यक होते हैं।

**3. मनोवैज्ञानिक युद्ध और मनोबल बढ़ाना**

अल्हा और उदल केवल कुशल योद्धा ही नहीं थे, बल्कि मनोवैज्ञानिक युद्ध के भी माहिर थे। वे विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करके अपने शत्रुओं को मानसिक रूप से कमजोर करते थे और अपनी सेना का मनोबल ऊँचा बनाए रखते थे। उनकी सबसे प्रभावी विधियों में से एक युद्ध गीत और युद्ध घोष का प्रयोग था। ये गीत, जो अक्सर युद्ध से पहले या युद्ध के दौरान रचे जाते थे, उनके पिछले विजय अभियानों और अपनी मातृभूमि के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता का वर्णन करते थे। इससे न केवल उनके सैनिकों में आत्मविश्वास बढ़ता था, बल्कि उनके शत्रुओं के हृदय में भय उत्पन्न होता था।

उनकी दूसरी प्रमुख रणनीति थी व्यक्तिगत वीरता का प्रदर्शन। अल्हा और उदल अपनी सेना का नेतृत्व स्वयं करते थे और शत्रु सेनापतियों से आमने–सामने की भिड़ंत में उतरते थे। उनकी अदम्य वीरता से उनकी सेना का मनोबल अत्यधिक बढ़ जाता था, जबकि उनके विरोधियों के भीतर भय और संकोच उत्पन्न हो जाता था। युद्ध में एक निडर नेता को अग्रिम पंक्ति में देखकर सैनिकों को यह विश्वास हो जाता था कि वे अजेय हैं और दिव्य आशीर्वाद प्राप्त योद्धा हैं।

इसके अलावा, वे अपने विरोधियों के विरुद्ध प्रतीकात्मक विरोध के कार्यों का भी उपयोग करते थे। युद्ध से पहले वे कभी–कभी अपने शत्रु नेताओं को संदेश भेजते थे या उन्हें व्यक्तिगत द्वंद्वयुद्ध की चुनौती देते थे। यह न केवल उनके आत्मविश्वास को दर्शाता था, बल्कि उनके विरोधियों को कठिन परिस्थिति में डाल देता था। यदि शत्रु सेनापति इस चुनौती को अस्वीकार करते, तो उनकी सेना के बीच उनकी कमजोरी उजागर हो जाती, जिससे उनके सैनिकों का मनोबल गिर जाता था।

अल्हा और उदल ने भ्रामक सूचनाओं और छल–कपट का भी कुशलतापूर्वक उपयोग किया। वे शत्रु खेमे में झूठी अफवाहें फैलाते थे, जैसे कि अतिरिक्त सेना के आने, गुप्त गठबंधनों या किसी दैवीय शक्ति की सहायता मिलने की खबरें। इससे शत्रु पक्ष में भ्रम और भय व्याप्त हो जाता था, जिससे वे गलत निर्णय लेने लगते थे और उनकी युद्ध संरचना असंगठित हो जाती थी। इसका लाभ उठाकर अल्हा और उदल अपनी युद्धनीति को प्रभावी ढंग से लागू करते थे।

अपनी सेना का मनोबल ऊँचा बनाए रखना उनके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। वे सुनिश्चित करते थे कि सैनिक सदैव प्रेरित रहें, जिसके लिए वे विशेष अनुष्ठान, प्रार्थनाएँ और आध्यात्मिक नेताओं का

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

आशीर्वाद प्राप्त करते थे। इससे उनकी सेना में यह विश्वास बना रहता था कि वे धर्मयुद्ध लड़ रहे हैं। उनके सैनिकों की अटूट निष्ठा उनकी नेतृत्व क्षमता का प्रमाण थी, क्योंकि वे बिना किसी संकोच के उनके लिए प्राणोत्सर्ग करने को तैयार रहते थे। इन सभी मनोवैज्ञानिक रणनीतियों को अपनी युद्धकला में सम्मिलित कर अल्हा और उदल ने न केवल युद्धों में विजय प्राप्त की, बल्कि स्वयं को महान योद्धाओं के रूप में स्थापित किया। शत्रु की मानसिक स्थिति को नियंत्रित करने और अपनी सेना का मनोबल ऊँचा रखने की उनकी क्षमता ने उन्हें भारतीय इतिहास में वीरता और रणनीतिक कौशल का अमर प्रतीक बना दिया।

**4. रक्षा और आक्रमणकारी युद्ध**

अल्हा और उदल ने रक्षात्मक और आक्रमणकारी युद्ध दोनों में असाधारण कौशल का प्रदर्शन किया। वे युद्धभूमि की परिस्थितियों और अपने प्रतिद्वंद्वियों की शक्ति के अनुसार अपनी रणनीतियाँ बदलने में निपुण थे। उनकी रक्षात्मक रणनीतियाँ मुख्य रूप से महत्वपूर्ण स्थलों को सुदृढ़ करने पर केंद्रित थीं, ताकि शत्रु सेना चंदेल क्षेत्रों में आसानी से प्रवेश न कर सके। उन्होंने किलों, चौकियों और प्राकृतिक अवरोधों जैसे नदियों और पहाड़ियों को रणनीतिक रूप से मजबूत किया, जिससे आगे बढ़ती सेनाओं की गति धीमी हो जाती थी। ऊँची दीवारों, संकीर्ण पहाड़ी मार्गों और गुप्त खाइयों का उपयोग करके, उन्होंने प्रभावी रक्षात्मक दुर्गों का निर्माण किया, जो लंबे समय तक घेराबंदी का सामना कर सकते थे।

रक्षात्मक युद्धों में, वे बहुस्तरीय किलेबंदी पर निर्भर रहते थे और रणनीतिक स्थानों पर तीरंदाजों और भालेधारियों को तैनात करते थे, ताकि शत्रु के हमलों को रोका जा सके। वे 'भूमि उजाड़ने' की नीति का भी उपयोग करते थे, जहाँ वे उन क्षेत्रों में खाद्य आपूर्ति और संसाधनों को नष्ट कर देते थे, जो शत्रु के कब्जे में आने की संभावना रखते थे। इससे उनके विरोधियों की दीर्घकालिक आक्रमण क्षमता कमजोर हो जाती थी। इसके अतिरिक्त, वे 'आक्रमण और पलायन' रणनीति अपनाते थे, जिसमें छोटे समूह शत्रु सेना पर अचानक हमला करते, भ्रम और हानि पहुँचाते, और फिर सुरक्षित स्थानों की ओर लौट जाते थे।

आक्रमणकारी मोर्चे पर, अल्हा और उदल अपनी तेज गति से संचालित घुड़सवार सेना के लिए प्रसिद्ध थे, जो शत्रु रेखाओं को भेदने के लिए चपलता और तीव्रता का उपयोग करती थी। उनके घोड़े कुशलता से प्रशिक्षित थे, जिससे वे तीव्र गतिशीलता के साथ आक्रमण कर सकते थे और शत्रु सेना में अफरा–तफरी मचा सकते थे। इन हमलों को अक्सर 'नकली वापसी' के साथ संयोजित किया जाता था, जिसमें वे पीछे हटने का नाटक करते थे, जिससे शत्रु अत्यधिक उत्साह में उनका पीछा करता था। जैसे ही शत्रु अपनी स्थिति से बाहर निकलता, वे अचानक पलटकर एक जबरदस्त पलटवार करते थे।

उनकी सबसे प्रभावी आक्रमणकारी रणनीतियों में से एक थी 'संगठित बहुमुखी हमले', जिसमें विभिन्न इकाइयाँ शत्रु पर अलग–अलग दिशाओं से आक्रमण करती थीं। इससे शत्रु को दोबारा संगठित होने या एक मजबूत रक्षात्मक संरचना बनाने का अवसर नहीं मिलता था। यह रणनीति विशेष रूप से बड़ी लेकिन कम गतिशील सेनाओं के खिलाफ सफल होती थी, क्योंकि उन्हें एक साथ कई मोर्चों पर लड़ने के लिए मजबूर कर दिया जाता था। इसके अतिरिक्त, वे छलपूर्वक 'प्रलोभन सेनाएँ' भेजकर अपने विरोधियों को भ्रमित करते थे, जिससे शत्रु अपनी असली टार्गेट से ध्यान हटा लेता था और कमजोर, कम संरक्षित स्थानों पर हमला करना संभव हो जाता था।

अल्हा और उदल की रक्षात्मक और आक्रमणकारी रणनीतियों के बीच सहज परिवर्तन करने की क्षमता ने उन्हें एक अजेय योद्धा बना दिया था। वे युद्ध में समय और भूगोल के महत्व को भली–भाँति समझते थे और बुंदेलखंड के दुर्गम भूभाग का लाभ उठाकर अपने युद्ध कौशल को प्रभावी बनाते थे। उनके युद्ध रणनीति में संतुलित सतर्कता और आक्रामकता की मौजूदगी थी, जिससे उन्होंने कई विजय प्राप्त कीं और सैन्य रणनीति के क्षेत्र में अपना अमिट स्थान स्थापित किया। उनकी युद्ध शैलीकृसावधानी

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

और आक्रामकता के बीच संतुलनकृइतिहास में सैन्य रणनीति का एक महत्वपूर्ण अध्ययन है, जो यह दर्शाती है कि युद्ध में अनुकूलनशीलता और रणनीतिक योजना किस प्रकार जीत का निर्धारण कर सकती है।

## अल्हा–उदल का योद्धा धर्म

अल्हा और उदल का योद्धा धर्म क्षत्रिय मर्यादा और सम्मान की गहरी जड़ों से जुड़ा हुआ था, जो अटूट निष्ठा, अडिग साहस और कठिन परिस्थितियों में आत्मबलिदान पर आधारित था। बुंदेलखंड के वीर योद्धाओं के रूप में, उन्होंने कर्तव्य (धर्म), न्याय और सम्मान के मूल्यों को सर्वोपरि रखा और अपनी भूमि तथा जनता के प्रति अटूट समर्पण का परिचय दिया। उनकी निष्ठा चंदेल सम्राट परमर्दिदेव के प्रति अडिग रही, चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल क्यों न रही हों। उन्होंने भारी शत्रु बल और विश्वासघात का सामना करने के बावजूद अपने राजा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को कभी नहीं छोड़ा, जिससे वे योद्धा निष्ठा के उच्चतम आदर्शों का प्रतीक बने।

उनके योद्धा धर्म का एक महत्वपूर्ण पहलू 'धर्म युद्ध' (सत्य एवं न्याय हेतु युद्ध) में उनकी आस्था थी, जिसमें युद्ध व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि न्याय, सम्मान और मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ा जाता था। उन्होंने युद्ध में कभी लोभ या महत्वाकांक्षा के कारण भाग नहीं लिया, बल्कि अपने राज्य को बाहरी आक्रांताओं, विशेष रूप से पृथ्वीराज चौहान की सेनाओं से बचाने के लिए हथियार उठाए। उनका कर्तव्य केवल व्यक्तिगत विजय तक सीमित नहीं था, बल्कि उनका लक्ष्य बुंदेलखंड की संप्रभुता की रक्षा करना और उसकी जनता की सुरक्षा सुनिश्चित करना था।

अल्हा और उदल ने वीर भक्ति (पराक्रम की निष्ठा) के सिद्धांत का अनुपालन किया और अपने शत्रुओं की शक्ति कितनी भी प्रबल क्यों न रही हो, उन्होंने कभी युद्ध से पीछे हटना स्वीकार नहीं किया। उनका साहस केवल शारीरिक नहीं, बल्कि नैतिक भी थाकृउन्होंने विश्वासघात, छल–कपट या अन्यायपूर्ण युद्ध से सख्त परहेज किया। यहां तक कि जब पराजय निश्चित थी, तब भी उन्होंने अद्वितीय क्रोध और धैर्य के साथ युद्ध किया, यह मानते हुए कि युद्धभूमि में वीरगति को प्राप्त होना ही एक योद्धा की सर्वोच्च गौरव की प्राप्ति है। उनकी निडरता ने उनकी सेना को प्रेरित किया और ऐसा योद्धा भाव जगाया जो पीढ़ियों तक गूंजता रहा।

उनके योद्धा धर्म का एक और महत्वपूर्ण तत्व त्याग और निःस्वार्थता था। उन्होंने सदैव अपने जीवन को बड़े उद्देश्य के लिए समर्पित किया और अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण निष्ठा दिखाई। उनके बीच भाईचारे और युद्ध–संगठन की भावना यह दर्शाती है कि योद्धाओं के लिए युद्धभूमि केवल संघर्ष का स्थान नहीं, बल्कि एक पवित्र भूमि थी, जहाँ सम्मान की परीक्षा होती थी। अल्हा द्वारा राजसी सुख–सुविधाओं को ठुकराकर एक साधारण योद्धा के जीवन को अपनाने की कथा इस बात को और दृढ़ करती है कि उन्होंने भौतिक संपत्ति या प्रतिष्ठा से अधिक अपने सिद्धांतों को महत्व दिया।

यहाँ तक कि संघर्ष के क्षणों में भी, उन्होंने युद्ध के नैतिक मूल्यों का पालन किया, शत्रुओं के प्रति सम्मान बनाए रखा और यह सुनिश्चित किया कि युद्ध गरिमा के साथ लड़ा जाए। उनके किस्से न केवल उनकी विजयों को महिमामंडित करते हैं, बल्कि उनके नैतिक बल को भी उजागर करते हैं, जो उनके धर्मपरायण स्वभाव को दर्शाता है। लोकगीतों और प्रदर्शन कलाओं में अल्हा–उदल की निरंतर गूंज यह प्रमाणित करती है कि उनका योद्धा धर्म समय से परे एक जीवंत प्रतीक बन चुका है, जो बुंदेलखंड की सांस्कृतिक स्मृति में वीरता, कर्तव्य और सम्मान का संदेश देता है।

## बुंदेलखंड की सैन्य संस्कृति पर प्रभाव

अल्हा और उदल की विरासत ने बुंदेलखंड की सैन्य संस्कृति पर अमिट छाप छोड़ी है, जिससे उनकी वीरता, त्याग और अटूट निष्ठा की गाथाएँ पीढ़ियों तक प्रेरणा स्रोत बनी हुई हैं। उनके पराक्रम

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

की कहानियाँ इस क्षेत्र की लोक परंपराओं में गहराई से समाहित हैं, जहाँ लोकगाथाएँ और मौखिक कथाएँ उनकी वीरता को जीवंत बनाए रखती हैं। ये कथाएँ लोक नाटकों, पारंपरिक गीतों और कविताओं के माध्यम से सुनाई जाती हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि उनकी बहादुरी बुंदेलखंड की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग बनी रहे। ''ष्अल्हा–खंडष्'' नामक महाकाव्य आज भी लोक गायकों द्वारा विशेष रूप से त्योहारों और सामाजिक समारोहों में गाया जाता है, जिससे लोगों में साहस और देशभक्ति की भावना मजबूत होती है।

उनकी सैन्य रणनीतियाँ और योद्धा धर्म बुंदेलखंड की युद्ध परंपराओं को गहराई से प्रभावित कर चुके हैं, जिससे न केवल ऐतिहासिक योद्धाओं, बल्कि आधुनिक सैनिकों को भी प्रेरणा मिलती रही है। आज भी, बुंदेलखंड के कई परिवार अपनी योद्धा विरासत पर गर्व महसूस करते हैं और अल्हा–उदल को निडरता और सम्मान के प्रतीक के रूप में देखते हैं। उन्होंने जिन मूल्योंकृकर्तव्य, निष्ठा और बलिदानकृ का पालन किया, वे आज भी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों और सामाजिक परंपराओं में देखे जा सकते हैं। उनके ऐतिहासिक युद्धों के प्रभाव को स्थानीय युद्धकला परंपराओं में भी देखा जा सकता है, जहाँ तलवारबाजी और युद्ध कौशल की तकनीकें पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रही हैं।

लोककथाओं से इतर, अल्हा और उदल का प्रभाव बुंदेलखंड की क्षेत्रीय पहचान और ऐतिहासिक चेतना तक फैला हुआ है। उनकी गाथाएँ बुंदेलखंड के शक्तिशाली शत्रुओं के विरुद्ध प्रतिरोध का प्रतीक हैं, जो आत्मनिर्णय और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की भावना को प्रोत्साहित करती हैं। इस क्षेत्र के लोग उन्हें बुंदेलखंड की संप्रभुता के रक्षक के रूप में देखते हैं और उनकी विरासत को क्षेत्रीय गर्व की व्यापक धारा से जोड़ते हैं। यह ऐतिहासिक पहचान उन स्मारकों और मंदिरों के माध्यम से और भी सुदृढ़ होती है जो अल्हा–उदल को समर्पित हैं, जहाँ श्रद्धालु उनकी योद्धा भावना का सम्मान करते हैं।

उनकी वीरगाथाओं का प्रभाव भारतीय सशस्त्र बलों तक भी पहुँचा है, जहाँ बुंदेलखंड के सैनिक उनकी बहादुरी से प्रेरणा लेते हैं। उनकी अटूट निष्ठा, धैर्य और किसी महान उद्देश्य के लिए अपने प्राण न्योछावर करने की भावना आज भी आधुनिक योद्धाओं के लिए प्रेरणास्रोत बनी हुई है। इसके अतिरिक्त, अल्हा–उदल से संबंधित लोककथाओं ने साहित्य, रंगमंच और यहाँ तक कि सिनेमा को भी प्रभावित किया है, जहाँ उन्हें महावीर योद्धाओं के रूप में चित्रित किया जाता है, जो बुंदेलखंड की सैन्य परंपराओं की श्रेष्ठता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

युगों के बीत जाने के बावजूद, अल्हा और उदल की सांस्कृतिक अमरता अटूट बनी हुई है, जो यह सिद्ध करती है कि वीरता और बलिदान समय से परे होते हैं। बुंदेलखंड की मौखिक परंपराओं, ऐतिहासिक आख्यानों और सामूहिक स्मृतियों में उनकी सतत उपस्थिति यह दर्शाती है कि उन्होंने इस क्षेत्र की सैन्य संस्कृति पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा है। जब तक उनकी गाथाएँ गाई जाती रहेंगी और स्मरण की जाती रहेंगी, अल्हा और उदल बुंदेलखंड के हृदय में वीरता और योद्धा भावना के शाश्वत प्रतीक बने रहेंगे।

## निष्कर्ष

अल्हा और उदल की सैन्य रणनीतियाँ और योद्धा मर्यादा हमें मध्यकालीन भारतीय युद्धकला के रणनीतिक और नैतिक पक्षों की गहन समझ प्रदान करती हैं। उनकी सामरिक कुशलता और अटूट सिद्धांतों का संगम न केवल उन्हें अजेय योद्धा बनाता है, बल्कि उन्हें बुंदेलखंड के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में अमर भी कर देता है। छापामार युद्ध, युद्धक्षेत्र संरचनाएँ, मनोवैज्ञानिक रणनीतियाँ और रक्षात्मक–आक्रामक युद्धनीति में उनकी निपुणता उनके सैन्य विज्ञान की गहरी समझ को दर्शाती है, जिससे वे शक्तिशाली शत्रु सेनाओं को चुनौती दे सके और उन्हें मात दे सके।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

सामरिक कुशलता से परे, अल्हा और उदल ने क्षत्रिय मर्यादा की पराकाष्ठा को जीया, जहाँ निष्ठा, साहस और बलिदान सर्वोपरि थे। चंदेल वंश के राजा परमर्दिदेव के प्रति उनकी अटूट भक्ति और धर्म युद्ध (धर्मयुद्ध) के प्रति उनकी निष्ठा, उनके कार्यों को संचालित करने वाले नैतिक सिद्धांतों को दर्शाती है। उनकी गाथाएँ कर्तव्य और नियति के बीच के संबंध को उजागर करती हैं, यह दर्शाते हुए कि सच्चे योद्धा निजी स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि न्याय और अपने लोगों की रक्षा के लिए लड़ते हैं।

उनकी विरासत लोककथाओं, वीर गाथाओं और मौखिक परंपराओं में जीवित है, जो उनकी वीरता को आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनाए रखती है। उनके शौर्य की कहानियाँ बुंदेलखंड की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग बनी हुई हैं, जो धैर्य, देशभक्ति और वीरता के आदर्शों को पुष्ट करती हैं। लोकगायक अब भी उनके युद्धों का वर्णन करते हैं, जिससे उनकी स्मृति लोगों के हृदयों और मनों में जीवंत बनी रहती है। उनकी प्रभावशीलता केवल कथाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि क्षेत्र की सैन्य परंपराओं को भी आकार देती है, जिससे वे लोग गर्व की अनुभूति करते हैं जो अपने वंश को इन महान योद्धाओं से जोड़ते हैं।

ऐतिहासिक अभिलेखों, शिलालेखों, मध्यकालीन ग्रंथों और क्षेत्रीय परंपराओं का विस्तृत अध्ययन उनकी सैन्य इतिहास में भूमिका की अधिक गहन समझ प्रदान कर सकता है। पुरातात्त्विक खोजों, पाठ्य स्रोतों और अंतःविषयक शोधों के विश्लेषण से इतिहास और पौराणिकता के बीच के अंतर को स्पष्ट किया जा सकता है, जिससे उनकी वास्तविक ऐतिहासिक विरासत को बेहतर ढंग से समझा जा सके। उनके युद्ध कौशल, नेतृत्व शैली और सामाजिक–राजनीतिक भूमिकाओं के गहन अध्ययन से मध्यकालीन भारतीय युद्धकला के व्यापक पहलुओं पर भी प्रकाश डाला जा सकता है।

अतः, चाहे उन्हें ऐतिहासिक योद्धा के रूप में देखा जाए या महाकाव्यात्मक नायक के रूप में, अल्हा और उदल वीरता और बलिदान के शाश्वत प्रतीक बने रहेंगे। उनकी कथाएँ आज भी लोगों को रोमांचित और प्रेरित करती हैं, यह याद दिलाते हुए कि वीरता, रणनीति और नैतिकता ही महान योद्धाओं को परिभाषित करते हैं। जब तक उनकी कहानियाँ गाई और याद की जाती रहेंगी, तब तक उनकी विरासत बुंदेलखंड की समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर का अविभाज्य अंग बनी रहेगी।

## संदर्भ

1. शर्मा, दशरथ. प्रारंभिक चौहान वंश. मोतीलाल बनारसीदास, 1959, पृ. 112–134।
2. मजूमदार, आर.सी. भारतीय लोगों का इतिहास और संस्कृतिरू दिल्ली सल्तनत. भारतीय विद्या भवन, 1951, पृ. 98–122।
3. बुंदेलखंड क्षेत्र से एकत्रित मौखिक परंपराएं और लोक कथाएं।
4. सिंह, के. पृथ्वीराज चौहानरू एक ऐतिहासिक विश्लेषण. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999, पृ. 87–105।
5. थप्पर, रोमिला. सोमनाथरू इतिहास की कई आवाजें. वर्सो, 2004, पृ. 45–79।
6. गोयल, एस. जेझाकभुक्ति के चंदेल और उनके सैन्य अभियान. मनोहर पब्लिशर्स, 2012, पृ. 59–94।
7. नाथ, आर. चंदेलों की वास्तुकला. अभिनव पब्लिकेशन्स, 2002, पृ. 143–165।
8. चट्टोपाध्याय, बी. डी. प्रारंभिक मध्यकालीन भारत का निर्माण. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1994, पृ. 67–89।
9. देव, पी. बुंदेलखंड की लोक गाथाएँ और महाकाव्य. साहित्य अकादमी, 2014, पृ. 102–125।
10. जैन, एम. बुंदेलखंड की सैन्य संस्कृति. हेरिटेज बुक्स, 2017, पृ. 78–99।
11. मिश्रा, आर. मध्यकालीन भारत में युद्ध कला. मनोहर पब्लिशर्स, 2003, पृ. 150–172।
12. कुल्के, एच. प्रारंभिक मध्यकालीन भारत में राज्य और युद्ध. रूटलेज, 2009, पृ. 33–56।

**13.** शर्मा, एल. बुंदेलखंड में योद्धा परंपरा. राज पब्लिकेशन्स, 2015, पृ. 89–117।
**14.** प्रसाद, आई. भारतीय युद्ध इतिहासरू मध्यकालीन युग. ओरिएंट लॉन्गमैन, 1975, पृ. 203–227।
**15.** बोस, एस. भारत की वीर गाथाएँ. पेंगुइन बुक्स, 2011, पृ. 120–148।
**16.** वर्मा, ए. भारतीय जनरलों के सामरिक नवाचार. हेरिटेज बुक्स, 2008, पृ. 92–113।
**17.** मेहता, जे. मध्यकालीन भारतीय सैन्य प्रणाली. अभिनव पब्लिकेशन्स, 2001, पृ. 132–157।
**18.** बनर्जी, जी. क्षत्रिय परंपराएँ और युद्ध कला. मनोहर पब्लिशर्स, 2013, पृ. 80–110।
**19.** सिन्हा, आर. राजपुताना इतिहासरू गाथाएँ और युद्ध. ओरिएंट लॉन्गमैन, 2006, पृ. 150–179।
**20.** यादव, बी. योद्धा राजा और उनकी रणनीतियाँ. राज पब्लिकेशन्स, 2018, पृ. 95–128।